सहायक सुविधाएं

परिषद के 2 संस्थानों, चेन्नई स्थित राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञानी संस्थान तथा नई दिल्ली स्थित आयुर्विज्ञान सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (नवम्बर 2005 से राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के नाम से ज्ञात) द्वारा परिषद मुख्यालय एवं इसके संस्थानों के वैज्ञानिकों एवं अन्य गैर आई सी एम आर संस्थानों को परामर्श एवं सांख्यिकी सहायता प्रदान की गई। राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान द्वारा फील्ड–रोग जानपदिकी पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, दोनों संस्थान कई बहुकेन्द्रीय परीक्षणों में भाग ले रहे हैं।

भारत एवं अन्य देशों तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के बीच जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जारी है। परिषद द्वारा विदेशी प्रयोगशालाओं में भारत से तथा भारत में जैवआयुर्विज्ञानी वैज्ञानिकों के परस्पर भ्रमण भी आयोजित किए जाते हैं। परिषद द्वारा भारतीय वैज्ञानिकों के लिए डब्ल्यू एच ओ द्वैवार्षिक शोधवृत्ति कार्यक्रम का भी समन्वयन किया जाता है।

परिषद द्वारा जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में उत्पन्न नए ज्ञान के संरक्षण के लिए एक बौद्धिक सम्पदा अधिकार कक्ष की स्थापना की गई है। इस यूनिट द्वारा वैज्ञानिक समुदाय में बौद्धिक सम्पदा जागरूकता, संरक्षण एवं प्रसार के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

राष्ट्रीय जानपदिकरोगविज्ञानी संस्थान, चेन्नई

हिन्द महासागर में सुनामी

दिनांक 26 दिसम्बर, 2004 को इण्डोनेशिया में आए भूकम्प के पश्चात् तमिल नाडु के क्षेत्रों में सुनामी की लहरों ने कहर बरपाया। राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान द्वारा तटीय मत्स्यपालन वाले सुनामी प्रभावित गावों में एक समुदाय–आधारित सर्वेक्षण किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य पश्च–अभिघात तनाव विकार (PTSD) की व्यापकता का आकलन तथा इसके खतरे के कारकों की पहचान करना था। सुनामी के पश्चात मानसिक स्वास्थ्य पर भी गतिविधियां जारी रखी गईं। यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलीफोर्निया, यू एस ए के सहयोग में मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य परिणामों पर एक लांगीट्युडिनल अध्ययन का आयोजन है।

फील्ड रोगजानपदिकी प्रशिक्षण कार्यक्रम

राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान द्वारा वर्ष 2001 से 2 वर्षीय फील्ड रोगजानपदिकी प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जनवरी 2006 तक इस पाठ्यक्रम में 14 राज्यों से कुल 45 छात्रों को शामिल किया गया है तथा 15 छात्रों ने ग्रेजुएट किया। ये छात्र देश के विभिन्न राज्यों यथा–आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, तमिल नाडु, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरांचल, मीज़ोरम तथा अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह के थे।

फील्ड रोगजानपदिकी प्रशिक्षण कार्यक्रम के छात्रों द्वारा वर्ष 2005-2006 के दौरान कई प्रकोपों का अध्ययन किया गया। अध्ययन किए गए कुछ महत्वपूर्ण प्रकोपों में शामिल हैं: उत्तरांचल के मेहरागांव में यकृतशोथ के प्रकोप का अध्ययन, पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के हुसेनिडह में खसरे का प्रकोप, नई दिल्ली में प्रवासी समुदाय में अतिसार, मध्य प्रदेश में जबलपुर के बिन्झा गांव में छोटी माता (चिकेन पॉक्स) का प्रकोप, बिहार में पटना के एक स्थानिक क्लब में तीव्र ज्वर रोग का प्रकोप, हैदराबाद में यकृतशोथ ई प्रकोप तथा आन्ध्र प्रदेश में चिकनगुन्या प्रकोप।

टाईप 2 मधुमेह मेलिटस के लिए विजयसार (*टीरोकार्पस मार्सुपियम*) के साथ चिकित्सीय परीक्षण

राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान द्वारा ऐसे रोगियों जो पहले से एलोपैथिक एकलचिकित्सा ले रहे हैं में टाइप 2 मधुमेह में रक्त ग्लूकोज़ नियंत्रण तथा इस पादप के प्रतिकूल प्रभाव के निर्धारण के लिए विजयसार के साथ बहुकेन्द्रीय परीक्षण जारी रखे गए। परिणामों में देखा गया कि टाइप 2 मधुमेह के उपचार में 6 ग्रा. प्रतिदिन खुराक पर विजयसार सुरक्षित है। इस औषधि के इतर प्रभाव नहीं थे और न ही अल्पग्लूकोज़रक्तता देखी गई। कुल 503 रोगियों के विश्लेषण पर, 196 लोगों ने 20 सप्ताह का उपचार पूर्ण किया तथा इनमें से 179 लोगों का रक्त ग्लूकोज़ नियंत्रित रहा।

ऊतक संवर्धन रेबीज़ रोधी वैक्सीन के अंतस्त्वक प्रयोग पर बहुकेन्द्रीय संभाव्यता अध्ययन

कोशिका संवर्ध एवं शोधित एम्ब्रियोनेटेड रेबीज वैक्सीन की लघु खुराक का मल्टी–साइट अंतस्त्वक प्रयोग मानवों को प्रोवेन रेबिड जंतुओं से काटने के पश्चात बचाव करता है। अंतस्त्वक प्रयोग से PEP की लागत में कमी आ जाती है तथा विकासशील देशों में इन वैक्सीनों की लागत कम करने का यह एक प्रभावी तरीका है। कई देशों द्वारा मानव रेबीज़ की रोकथाम में इन वैक्सीनों का अंतस्त्वक प्रयोग सफलतापूर्वक किया जा रहा है। आई सी एम आर द्वारा इन वैक्सीनों के अंतस्त्वक प्रयोग के चिकित्सीय परीक्षणों की संभाव्यता के आकलन के लिए एक बहुकेन्द्रीय अध्ययनों की शुरुआत की गई। चार स्वदेशी वैक्सीनों (अभयरब PVRV, कूनूर PVRV, रेबिपुर PCECV तथा वैक्सीरेब PDEV) का अंतस्त्वक प्रयोग किया गया। फ्रेंच PVRV (एवेन्टीस) को अंतः पेशी रूप से दिया गया। प्रत्येक वैक्सीन आर्म के लिए प्रत्येक तीनों भागीदार केन्द्रों में 10 का सैम्पल साइज़ चुना गया। अध्ययन के परिणामों से संकेत मिलता है कि अंतस्त्वक रूप

से दी गई सभी वैक्सीनें सुरक्षित थीं। तीन वैक्सीनों यथा–अभयरब PVRV, कूनूर PVRV, रेबिपुर PCECV द्वारा सभी स्वयंसेवकों में 14 दिन में सुरक्षा स्तर से ऊपर प्रतिरक्षा अनुक्रिया उत्पन्न की गई तथा यह प्रतिरक्षा अनुक्रिया 90 दिनों के फॉलो–अप तक बना रहा। हालांकि, अन्य वैक्सीनों की तुलना में वैक्सीरेब PDEV की प्रति अनुक्रिया कम की (चित्र 1)। चुने हुए जिलों में संभाव्यता सर्वेक्षण के परिणामों से संकेत मिला कि अधिकतर जिला अस्पतालों में रेबीज़ वैक्सीन के अंतस्त्वक प्रयोग के लिए वांछित दक्षता एवं आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध थीं। वर्तमान अध्ययन के परिणामों के आधार पर, तीन वैक्सीनों यथा–अभयरब PVRV, कूनूर PVRV रेबिपुर, PCECV के भारत में अंतस्त्वक प्रयोग के लिए सिफारिश की गई है।

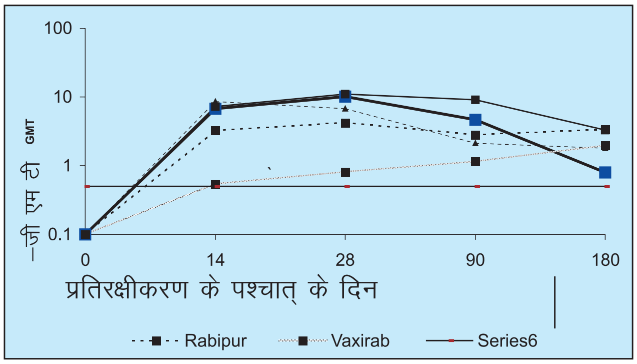

चित्र 1. विभिन्न कोशिका संवर्ध एवं शोधित एम्ब्रियोनेटेड रेबीज़ वैक्सीन के प्रति जिओमेट्रिक मीन एन्टीबॉडी टाइटर (GMT)

कुष्ठरोग वैक्सीन परीक्षण

राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान सामान्य स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से सभी तरह के कुष्ठरोगियों के लिए 6–माह बहुदण्डाणु युक्त MDT (यूनिफार्म MDT) की प्रभावशीलता के आकलन के लिए बहुकेन्द्रीय परीक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय समन्वयन केन्द्र है। अप्रैल 2006 तक कुल 2504 रोगियों को पंजीकृत किया गया। भागीदार केन्द्रों को बढ़ाने की आवश्यकता है। अन्तरिम विश्लेषण पूर्ण किया गया तथा रिपोर्ट तैयार की गई है।

भारत में उच्च एच आई वी व्यापकता वाले क्षेत्रों में मैपिंग, आकार आकलन एवं एकीकृत व्यावहारिक एवं जैविक आकलन

बिल एवं मेलिन्डा गेट्स फाउन्डेशन द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त आव्हान इंडिया इनीशिएटिव जो 6 राज्यों के 71 जिलों एवं 5 राष्ट्रीय हाइवे स्थलों पर चल रहा है के मूल्यांकन एवं प्रभाव मॉनीटरिंग के उद्देश्य से आकड़ों को एकत्र करने हेतु अध्ययन जारी है। प्रस्तावित मैपिंग, आकार आकलन एवं एकीकृत व्यावहारिक एवं जैविक आकलन के द्वारा कुछ महत्वपूर्ण आंकड़े प्राप्त होंगे जो इंटरवेशन्स के प्रमुख परिणामों एवं प्रभाव के आकलन के लिए आवश्यक हैं। एकीकृत व्यावहारिक एवं जैविक आकलन (IBBA) का विशिष्ट उद्देश्य आव्हान परियोजना राज्यों यथा आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिल नाडु, कर्नाटक, मणिपुर एवं नागालैण्ड तथा राष्ट्रीय हाइवे के समीप चुने हुए जिलों से निम्न आंकड़े एकत्र करना है। तमिल नाडु के लिए राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान की अमलीकरण संस्था के रूप में पहचान हुई है। जहां गतिविधियों को 2 प्रावस्थाओं में बांट दिया गया है। प्रथम प्रावस्था में अनुसंधान एजेंसी की पहचान, परियोजना स्टॉफ की भर्ती, IBBA टीम का पूर्वाभिमुखीकरण एवं प्रशिक्षण तथा मदुरई, सेलम एवं धर्मापुरी पर IBBA को शुरू किया गया।

दक्षिण भारत में शहरी औद्योगिक आबादी में हृद्वाहिकीय खतरे के कारकों की व्यापकता एवं वितरण

राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान द्वारा चेन्नई में एक औद्योगिक इकाई के 1163 लोगों में हृद्वाहिकीय खतरे के कारकों की व्यापकता के निर्धारण के लिए एक अध्ययन किया गया। परिणामों में व्यवहारात्मक खतरे के कारकों की उच्च व्यापकता का संकेत मिला–तम्बाकू का प्रयोग (39%), मध्य स्थूलता (63%), अतिरक्तदाब (31%) एवं मधुमेह (15%) उनमें पाइ गई। इस आबादी के लिए प्रभावकारी खतरे के कारकों का इंटरवेंशन कार्यक्रम विकसित किया जा रहा है। ताकी भविष्य में हृद्वाहिकीय रोग का खतरा कम हो।

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली

पांच वर्ष से कम आयु में मर्त्यता रुझान के घटक, वर्तमान गतिहीनता तथा भावी पूर्वानुमानिक स्तर

इस अध्ययन का उद्देश्य वर्ष 1978-2002 की अवधि के दौरान पांच वर्ष से कम आयु में मर्त्यता के प्रत्येक घटकों में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना है; भारत में शिशु मर्त्यतादर की प्रतीत होती गतिहीनता से सम्बद्ध कारकों का विश्लेषण तथा वर्ष 2016 तक राज्यों द्वारा शिशु मर्त्यता दर (IMR) एवं 5 वर्ष से कम आयु में मर्त्यता दर (U5MR) के भावी परिदृश्य को विकसित करना। अध्ययन के अन्तर्गत नवजात मर्त्यता पर जन्मपूर्व एवं जन्म संबद्ध सेवाओं के प्रयोग के प्रभाव का परीक्षण किया जाता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक एवं आर्थिक अलाभान्वित वर्ग में शिशु मर्त्यता दर (IMR) एवं 5 वर्ष से कम आयु में मर्त्यता दर (USMR) का भी पता लगाया गया। इसके अलावा, लाभान्वित/अलाभान्वित वर्ग में उच्च खतरे वाले जन्मों की व्यापकता तथा स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाओं के प्रयोग में विभेदीकरण के साथ उनकी सम्बद्धता के विश्लेषण द्वारा हाल के वर्षों में शिशु मर्त्यता में गिरावट की दर में मन्दता के कारणों के परीक्षणों का भी प्रयास किया गया।

वर्ष 2016 तक प्रक्षेपित शिशु मर्त्यता दर एवं मर्त्यता में देखा गया कि आर सी एच सेवाओं की अन्तर्वस्तु एवं गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए संगठित प्रयासों तथा समुदाय संघटन नीतियों पर संकेन्द्रित बिना वर्ष 2010 तक शिशु मर्त्यता दर के लिए निर्धारित हुए लक्ष्य 30 को प्राप्त करना भारत के लिए दुर्लभ होगा। इसके

अतिरिक्त, भविष्य में शिशु मर्त्यता दर एवं बाल मर्त्यता में पर्याप्त गिरावट लाने के लिए आर्थिक एवं सामाजिक सुधार कार्यक्रम इंटरवेंशन के आनुपातिक होने चाहिए।

मध्य प्रदेश में शिशु स्वास्थ्य पर खाद्य पुष्टीकरण के प्रभाव का आकलन

विश्व खाद्य कार्यक्रम द्वारा राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान को यह परियोजना दी गई जिसका उद्देश्य मध्य प्रदेश के सांची एवं विदिशा जिले के 2 खण्डों (ब्लाक्स) में बच्चों में (आयु 6–59 माह) पुष्टीकृत खाद्यों के प्रभाव का अध्ययन करना था तथा सम्पूरण के प्रभाव का अन्तिम रेखा मूल्यांकन (एन्ड लाइन इवैल्युएशन) करना था। यह देखा गया कि दोनों ही खण्डों में अरक्तता की व्यापकता में उल्लेखनीय सुधार था। विटामिन ए अल्पता के स्तरों के संदर्भ में, कंट्रोल ब्लाक की तुलना में इंटरवेंशन ब्लाक में गिरावट उल्लेखनीय रूप से उच्च है। दोनों ही ब्लाकों में आधार रेखा की तुलना में अन्त मे अत्यधिक कुपोषित बच्चों की संख्या के प्रतिशत में भी उल्लेखनीय गिरावट आ गई।

एच आई वी आकलन तथा एच आई वी सेंटीनल निगरानी कार्य आकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान द्वारा एच आई वी आकलन विधि के पुनरीक्षण, पूर्वानुमान की वैधता तथा एच आई वी सेंटीनल निगरानी कार्य आंकड़ों के आधार पर प्रतिवर्ष देश में एच आई वी भार के आकलन को प्रदान करना एवं एच आई वी सेंटीनल निगरानी कार्य एवं आंकड़ों के विस्तृत विश्लेषण से सम्बद्ध कार्य किया जा रहा है। वर्ष 2003 में आकलन विधि का पुनरीक्षण एवं आकलन में प्रयोग में लाए पूर्वानुमान की वैधता का कार्य किया गया। प्रतिवर्ष इसका पुनरीक्षण किया जाता है तथा देश में एच आई वी भार के आकलन को अन्तिम रूप देने के लिए विशेषज्ञों के साथ विचार–विमर्श करके सर्वसम्मति प्राप्त की जाती है। वर्ष 2004 में, यह अनुमान किया गया कि 51–49 वर्षीय आयु वर्ग में 5.08 वयस्क एच आई वी से संक्रमित होते हैं। इसके अतिरिक्त, संक्रमित माताओं से कुल 56,787 संक्रमित बच्चे जन्मे हैं। वर्ष 2005 में एच आई वी संक्रमण के अनुमानित व्यक्तियों की संख्या 5.206 मिलियन है। वर्ष 2003–05 के दौरान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में एच आई वी संक्रमण की संख्या चित्र 2 में दशाई गई है। चित्र 3 में भारत में वर्ष 2003–05 के दौरान एच आई वी संक्रमण की अनुमानित संख्या प्रदर्शित है। भारत में सेंटीनल सर्वेलेन्स (निगरानी कार्य) की स्थापना के पश्चात् से सेंटीनल स्थलों की संख्या बढ़ रही है। वर्ष 2005 में कुल सेंटीनल स्थलों की संख्या 704 थी। सभी खतरे वाले वर्गों में समझी जाने वाली आबादी में केवल 15-49 आयु वर्ग के लोग शामिल हैं इसलिए उच्च खतरे वाले व्यवहार की प्रभावसीमा में आने वाली वयस्क आबादी से एच आई वी आकलन को प्राप्त किया जाता है। हालांकि, संक्रमित माताओं से प्राप्त सूचना को प्रयोग में लाकर नवजात एच आई वी बच्चों का भी आकलन किया जाता है।

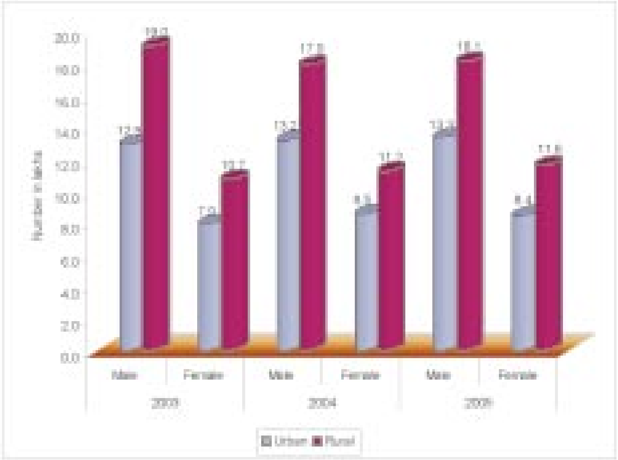

चित्र 2. वर्ष 2003-05 के दौरान रहने के स्थान एवं लिंग के आधार पर 15-49 वर्षीय के आयु वर्ग में एच आई वी संक्रमण की संख्या

संख्या (लाख में) पुरुष महिला
शहरी पुरुष महिला
ग्रामीण पुरुष महिला

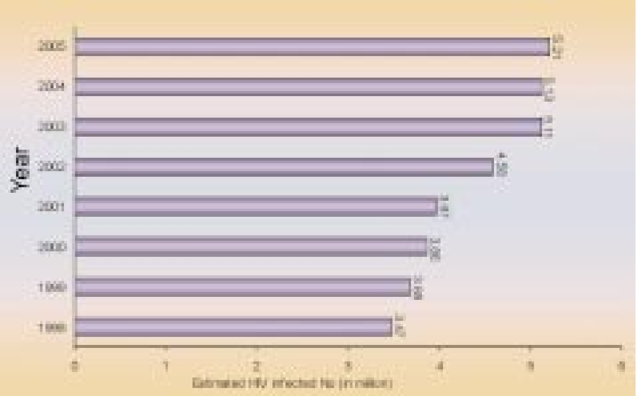

चित्र 3. भारत में एच आई वी आकलन वर्ष अनुमानित एच आई वी संक्रमित व्यक्ति (मिलियन में)

आई सी एम आर के संस्थानों के वैज्ञानिकों में कार्य संतोष का स्तर

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान द्वारा आई सी एम आर के विभिन्न संस्थानों के वैज्ञानिकों में कार्य संतोष के स्तरों की जांच के लिए एक अध्ययन किया गया। उच्च गुणवत्ता के अनुसंधान को बनाए रखने तथा संगठन की वृद्धि के लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वैज्ञानिक एवं अन्य सहायक स्टाफ कार्य परिवेश से संतुष्ट है, जिसमें उनके कार्य करने के लिए उपलब्ध सुविधाएं एवं उनके प्रयासों की पहचान शामिल है। अध्ययन का उद्देश्य देश भर में फैले वैज्ञानिक स्टाफ के प्रासंगिक कार्य परिवेश के संदर्भ में प्रबंधन

को अवगत कराना है। अनुक्रिया दर लगभग 85% थी। अध्ययन से सम्बद्ध सर्वेक्षण कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा आंकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है।

पुस्तकालय आधुनिकीकरण

आई सी एम आर पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण के अंतर्गत परिषद द्वारा उपलब्ध संसाधनों के पर्याप्त प्रयोग हेतु सूचना के इलेक्ट्रानिक प्रसार का कार्य किया जा रहा है। कुल 6 आई सी एम आर पुस्तकालयों द्वारा फुल टेक्स्ट इलेक्ट्रानिक डाटाबेस प्रोक्वेस्ट (ProQuest) (जिसमें लगभग 550 फुल टेक्स्ट मेडिकल जर्नल उपलब्ध हैं) के सबस्क्रिप्शन (ग्राहकी) का पुनः नवीनीकरण किया गया है। आई सी एम आर संस्थानों के पुस्तकालयों में संसाधन की साझेदारी को बढ़ावा देने के JCCC (J गेट कस्टम कन्टेन्ट फॉर कंशार्शिया) का पुनः नवीनीकरण किया गया है। JCCC/ICMR के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद (दक्षिणी क्षेत्र संस्थान), क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, भुवनेश्वर (पूर्वी), राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे (पश्चिमी) एवं राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली (उत्तरी) पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। यूनियन कैटालॉग ऑफ जर्नल्स का प्रिंट वर्ज़न आई सी एम आर के पुस्तकालयों एवं सभी मेडिकल पुस्तकालयों तथा भारत में आयुर्विज्ञानी अनुसंधान संस्थानों में वितरण के लिए तैयार है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

आई सी एम आर द्वारा भारत तथा अन्य देशों जैसे बुल्गारिया, फ्रांस, जर्मनी, यू एस ए, क्यूबा, कनाडा, चीन, इरान, म्यानमार, मोजाम्बिक आदि तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का समन्वयन किया जाता है। प्रतिवेदित वर्ष के दौरान अंतर्राष्ट्रीय सहयोगी परियोजनाओं/कार्यक्रम के अंतर्गत भारत में एवं भारत के बाहर वैज्ञानिकों के कुल 73 पारस्परिक–भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किए गए। आपसी महत्व के स्वास्थ्य पहलुओं पर साथ–साथ कार्य करने के लिए एम आर सी (दक्षिण अफ्रीका), FIOCRU2 (ब्राज़ील) एवं आई सी एम आर के बीच दक्षिण–दक्षिण सहयोग के लिए एक सहमति ज्ञापन (MOU) पर हस्ताक्षर किए गए। प्रतिवेदित वर्ष के दौरान स्वास्थ्य मंत्रालय जांच समिति (HMSC) की 5 बैठकें आयोजित की गईं, जिसमें भारत की तरफ से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग/सहायता के लिए 73 परियोजनाओं को मंजूरी प्रदान की गई।

जैवआयुर्विज्ञानी शोधकर्ताओं के उच्च दक्षता वाले पूल को बनाने के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आई सी एम आर द्वारा एक नई पहल की गई तथा 6 युवा एवं 3 वरिष्ठ भारतीय जैवआयुर्विज्ञानी वैज्ञानिकों को अन्तर्राष्ट्रीय फेलोशिप प्रदान की गई, जिन्होंने सफलतापूर्वक विदेशी प्रयोगशालाओं में भ्रमण किया। विकासशील देशों के वैज्ञानिकों के लिए भारत में उनके कार्य के क्षेत्र में ज्ञान में नवीनतम तरक्की के लिए प्रशिक्षण/प्रभावसीमा में आने के लिए अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप कार्यक्रम के अंतर्गत, प्रशिक्षण के लिए एक वैज्ञानिक द्वारा आई सी एम आर के संस्थान में भ्रमण किया गया।

बौद्धिक सम्पदा अधिकार

परिषद द्वारा नए ज्ञान जिसके फलस्वरूप व्यवसायीकरण के लिए बौद्धिक सम्पदा उत्पन्न हो की पहचान एवं संरक्षण के लिए संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके लिए, मुख्य ध्यान बौद्धिक सम्पदा जागरूकता, उत्पन्न करने, पहचान करने, संरक्षण, प्रसार, नियमन, मूल्यीकरण एवं गतिशीलता को वृद्धि पर दिया गया है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिषद द्वारा कुछ नई पहल शुरू करने के साथ जारी गतिविधियों को बनाए रखा गया।

कुल 8 पेटेन्ट जिसमें 5 पेटेन्ट कोआपरेशन ट्रीटी (PCT) की राष्ट्रीय प्रावस्था आवेदन शामिल है को भारतीय पेटेन्ट कार्यालय के साथ–साथ यूरोप, जापान, ब्राज़ील, सिंगापुर एवं यू एस ए में दर्ज़ (फाइल) किया गया। पॉण्डिचेरी स्थित रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र, से एक पेटेन्ट आवेदन जिसका शीर्षक "ए प्रोसेस फॉर दि प्रिप्रेशन ऑफ मॉस्कीटो लार्वीसाइडल फॉर्मुलेशन फ्रॉम *बैसीलस थूरिंजिएंसिस* वैर *इज़राइलेंसिस*" को 20 वर्ष के लिए मंजूरी मिल गई। कोलकाता स्थित क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र (पूर्वी) से एक डिज़ाइन पंजीकरण आवेदन जिसका शीर्षक "न्यू मॉडेल ऑफ साईकल रिक्शा" जिसे जून 2005 में फाइल किया गया था, को मंजूरी मिल गई। पॉण्डिचेरी स्थित रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र, से एक पेटेन्ट आवेदन जिसका शीर्षक "ए प्रोसेस फॉर दि प्रिप्रेशन ऑफ मॉस्कीटो लार्वीसाइडल फॉर्मुयुलेशन फ्रॉम *बैसीलस थूरिंजिएंसिस* वैर *इज़राइलेंसिस*" को 20 वर्ष के लिए मंजूरी मिल गई। कोलकाता स्थित क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र (पूर्वी) से एक डिज़ाइन पंजीकरण आवेदन जिसका शीर्षक "न्यू मॉडेल ऑफ साईकल रिक्शा" जिसे जून 2005 में फाइल किया गया था, को मंजूरी मिल गई। कोलकाता स्थित क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र (पूर्वी) से एक डिज़ाइन पंजीकरण आवेदन जिसका शीर्षक "न्यू मॉडेल ऑफ साईकल रिक्शा" जिसे जून 2005 में फाइल किया गया था, को मंजूरी मिल गई। साईकल रिक्शा का पुनर्निर्मित नवीन मॉडेल कोलकाता आधारित कम्पनी लूना टायर प्राइवेट लिमिटेड को हस्तांतरण के लिए तैयार है, तथा सहमति विज्ञप्ति (MOU) के लिए बात–चीत जारी है। हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा विकसित दोहरे पुष्टीकृत नमक से सम्बद्ध एक दूसरी आई सी एम आर अन्वेषण हैदराबाद आधारित उद्योग–टाटा साल्ट प्राइवेट लिमिटेड को हस्तांतरण के लिए परामर्श के अन्तिम दौर में है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

आई सी एम आर के विभिन्न संस्थानों द्वारा वैज्ञानिकों की रुचि के वर्तमान क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशालाओं का आयोजन जारी रखा गया। इसके अलावा सभी वैज्ञानीक विषयों पर परामर्श एवं संदर्भ सेवाओं को भी प्रदान किया गया।